कैंसर के साथ स्वस्थ जीवन

सभी के प्रतिरक्षा तंत्र में बहुत से गुण होते हैं। लेकिन एक गुण ऐसा भी है जिसके कारण कैंसर जैसी भयानक बीमारी होने का पता कई सालों तक नही लग पाता है। यह तथ्य एक नई खोज से सामने आया है। पता चला है कि कुछ जानवरों में छोटा व हानिरहित कैंसर ट्यूमर कई सालों तक अज्ञात पड़ा रहा।

आम तौर पर ट्यूमर और प्रतिरक्षा तंत्र एक तरह के संतुलन में रहते हैं। ऐसे में ट्यूमर न तो खत्म होता है, न बढ़ता है। ट्यूमर का बढ़ना तब शुरू होता है, जब किसी म्यूटेशन के कारण उसके बाहरी रूप में ऐसा परिवर्तन हो जाता है कि वह प्रतिरक्षा तंत्र को 'नज़र' आना बंद हो जाता है या प्रतिरक्षा तंत्र के निगरानी वाले स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। ऐसा तब होता है जब वह व्यक्ति शारीरिक या मानसिक रूप से तनाव में रहा हो।

शोधकर्ता यह खोजने की कोशिश कर रहे हैं कि कौन से अणु ट्यूमर को पहचानते हैं या फिर प्रतिरक्षा तंत्र की सतर्कता को कैसे बढ़ाया जाए। इसके द्वारा कैंसर से लड़ने में नई राह सामने आएगी, जिससे बीमारी को बढ़ने से पहले ही रोका जा सकेगा।

इसका पता लगाने के लिए वॉशिंग्टन विश्व विद्यालय के राबर्ट स्क्रीबर और उनके साथियों ने कुछ चूहे लिए। उनमें मेथिलकोलेनथ्रिन नामक कैंसरकारी पदार्थ प्रविष्ट करवाया, जो ट्यूमर की वृद्धि को उत्तेजित करता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि कृत्रिम एंटीबॉडीज़ को जब प्रतिरक्षा तंत्र में प्रविष्ट कराते हैं तब उसका संतुलन गड़बड़ा जाता है और ट्यूमर बढ़ने लगता है। उन्होंने श्वेत रक्त कोशिकाएं CD4 और CD8 या गामा इंटरफेरन को नष्ट कर दिया तो ट्यूमर बढ़ने लगा। स्क्रीबर कहते हैं कि यदि बढ़ती उम्र के कारण किसी व्यक्ति का प्रतिरक्षा तंत्र प्राकृतिक रूप से ठप हो जाए या जब कोई व्यक्ति अंग प्रत्यारोपण के बाद प्रतिरक्षा तंत्र को दबाने वाली दवाइयां ले रहा हो, तो ऐसा प्राकृतिक रूप से भी हो सकता है।

अर्थात प्रतिरक्षा तंत्र ट्यूमर को ऐसी निष्क्रिय अवस्था में रख सकता है कि उसका शारीरिक रूप से एहसास न हो और वह नुकसान न करे। हमारे बीच ऐसे कई लोग हैं जिन्हें ट्यूमर है लेकिन वे संतुलित अवस्था में हैं।

यह भी हो सकता है कि यदि हम उन कारकों को पहचान पाएं जो बीमारी को संतुलन में रखते हैं तो कैंसर का विकास ही नहीं हो पाएगा, तब शायद कैंसर एक लंबे समय तक रहने वाला मगर नियंत्रित रोग बन जाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***